परमेश्वर ने क्यों कहा स्मरण रखना

जो क्रू

Copyright © 2013, 2020
by Lu Ann Crews

All rights reserved.
Printed in India.

Published by:
Amazing Facts India
Post Box No 51
Banjara Hills, Hyderabad
Telangana, 500034
+91 916 916 4480

परमेश्वर ने क्यों कहा **स्मरण रखना**

जो क्रू

विषय

1. वह क्या कर सकता था? 2

2. सृष्टि – परमेश्वर की संप्रभुता की छाप 3

3. मन–परिवर्तन – काम में संलग्न रचनात्मक शक्ति 4

4. प्राधिकरण पर लड़ाई 6

5. व्यवस्था की परीक्षण बिंदु 8

6. प्रमुख भ्रांति – 1# सब्त का दिन केवल
यहूदियों के लिए बनाया गया था 10

7. प्रमुख भ्रांति – 2# बस सात दिनों में
किसी भी दिन को मानें 14

8. प्रमुख भ्रांति –3# हम सही सातवें
दिन का पता नहीं लगा सकते 17

9. प्रमुख भ्रांति– 4# सब्त मिस्र से
उद्धार का स्मारक मात्र था 22

10. प्रमुख भ्रांति– 5# पुनरुत्थान के
सम्मान में रविवार का पालन कर 24

अध्याय 1
वह क्या कर सकता था?

कई सर्वेक्षणों और प्रश्नावलियों ने इस बात की पुष्टि की है कि आधुनिक संशयवाद का सबसे लोकप्रिय रूप सृजन की कहानी को नकारना है। जिन मंत्रियों का साक्षात्कार लिया गया, उनमें से बहत्तर प्रतिशत मंत्रियों ने संदेह की अलग-अलग सीमा व्यक्त की कि बाइबिल वर्णन के अनुसार परमेश्वर ने वास्तव में बोलकर दुनिया की सृष्टि की। इस बुनियादी अविश्वास ने मसीह जगत के अन्य आधारभूत सिद्धांतों जैसे कुंवारी से जन्म और प्रायश्चित को अस्वीकार कर दिया है।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि उत्पत्ति की पुस्तक में सृष्टि के विवरण पर परमेश्वर ने प्रतीयमानतः बहुत अधिक विवाद का पूर्वानुमान लगाया था। आश्चर्यजनक द्रव्यमान को अस्तित्व में आने की केवल आज्ञा देकर विनिर्माण करने के अपने दावे- निश्चित रूप से इस तरह के विवरण के बारे में संदेह और अविश्वास करने वाले होंगे। और यहां तक कि जिन लोगों ने इसके बारे में पढ़ा और इसपर विश्वास किया, वे उत्पन्न होने वाले एक लाख झूठे देवताओं के भ्रामक प्रभाव के तहत चमत्कारी तथ्य को जल्द ही भूल जाने वाले थे।

इसलिए परमेश्वर को सृष्टि के अपने शक्तिशाली कार्य के ज्ञान को संरक्षित करने के लिए कुछ असामान्य करने की आवश्यकता थी। स्वर्ग और पृथ्वी को केवल आज्ञा के द्वारा अस्तित्व में लाने की शक्ति उसे सभी नकली देवताओं और उनके भ्रामक दावों से अलग करेगी। जब वह हमेशा के लिए अपने ईश्वरीय अधिकार की स्थापना

करता है तो वह ऐसा क्या कर सकता है जो मानव जाति को सृष्टि के फोकल सप्ताह में वापस लाएगा?

अध्याय 2

सृष्टि - परमेश्वर की संप्रभुता की छाप

परमेश्वर ने सृजन सप्ताह के सातवें दिन को विश्राम और स्मरण के पवित्र दिन के रूप में स्थापित करके रचनात्मक शक्ति के उस पुष्ट प्रदर्शन को स्मारक बनाना चुना। यह परमेश्वर की संप्रभुता की जबरदस्त रक्षा करेगा - एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में राज करने के उसके अधिकार की छाप। यह, उसी समय, हर देवता के, जिसने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया था, विनाशकारी असली रूप दिखलाने के रूप में खड़ा होगा।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के लेखन परमेश्वर की सृजन संबंधित अजीबोगरीब शक्तियों के अनुस्मारक से भरे है। दाउद ने लिखा, "क्योंकि देश देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं; परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है" (भजन संहिता 96:5)। यिर्मयाह ने इसे व्यक्त किया: "परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। ... ये देवता जिन्होंने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएंगे। ... उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया" (यिर्मयाह 10:10-12)।

क्या परमेश्वर ने स्वयं दुनिया की नजरों के सामने सृष्टि के सत्य को स्पष्ट रूप से बनाए रखने के लिए अत्यधिक आग्रह का प्रदर्शन किया है? हाँ। इस हद तक कि उसने सब्त को पवित्र रखने, और इस प्रकार, उसके दिव्य अधिकार को स्वीकार करने के लिए

प्रत्येक जीवित आत्मा के आवश्यक दायित्व को अपनी महान नैतिक व्यवस्था के मध्य भाग में लिखा। उन शाश्वत सिद्धांतों के अन्तर्गत, जो उसके राज्य की नींव रखते हैं और उसके स्वयं के आदर्श चरित्र को दर्शाते हैं, परमेश्वर ने ये शब्द लिखेः "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना ... क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया ... इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया" (निर्गमन 20:8-11)।

सृष्टि के सर्वशक्तिसंपन्न कार्य को उजागर करने के लिए कैसा आश्चर्यजनक प्रदर्शन! सप्ताह में एक बार, जब पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती, तो सब्त अनुस्मारक एक त्वरित सृष्टि के संदेश के साथ पृथ्वी के चारों ओर यात्रा करता, जो हर आदमी, महिला और बच्चे तक पहुंचता। परमेश्वर ने क्यों कहा स्मरण रखना? क्योंकि सब्त को भूलना सृष्टिकर्ता को भी भूलना है।

अध्याय 3

मन-परिवर्तन - काम में संलग्न रचनात्मक शक्ति

प्राकृतिक सृष्टि के वृत्तांत के समानांतर हम मानव हृदय को पुनर्रचना की परमेश्वर की शक्ति का रिकॉर्ड पाते हैं। जाहिर है, दोनों प्रक्रियाएँ एक ही सर्वशक्तिमान स्रोत से उपजी हैं। मन-

परिवर्तन को सम्पन्न करने के लिए उतनी ही शक्ति की आवश्यकता होती है जितनी कि किसी रचना को मौखिक रूप से अस्तित्व में लाने के लिए। प्रेरित ने कहा, "और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धामिर्कता, और पवित्रता में सृजा गया है" (इफिसियों 4:24)। चूँकि नया जन्म निर्दोष ठहराए गए विश्वासी का सबसे बुनियादी पहचान चिन्ह है, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि बाइबल के लेखक हमें लगातार रचनात्मक शक्ति की याद दिलाते हैं जो सच्चे परमेश्वर को सभी प्रतिरूपों से अलग करती है।

एक भौतिक सृजन के तथ्य मात्र से परे संकेत करते हुए, परमेश्वर ने यह कहा, "फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें; कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूँ" (यहेजकेल 20:12)।

कृपया ध्यान दें कि एक पवित्र सब्त को पवित्र लोगों की छाप होना था।"पवित्र" जिस का अर्थ है पवित्र उपयोग के लिये नियत करना (एक दिन जो परमेश्वर की सर्जनात्मक शक्ति की बात करता है), एक अनुस्मारक के रूप में भी कार्य करता है कि परमेश्वर नए जन्म या पुनः सृजन के माध्यम से एक पवित्र उपयोग के लिए लोगों को अलग कर सकता है।

इन तथ्यों के प्रकाश में, यह समझना आसान है कि शैतान ने सातवें दिन सब्त के खिलाफ निरंतर, दुस्साहसपूर्ण लड़ाई क्यों लड़ी है। लगभग छह सहस्राब्दियों के लिए उसने परमेश्वर के अधिकार की पवित्रता के विशेष चिन्ह- सब्त के दिन को नष्ट करने के लिए परंपरा के अभिमान, गलत जानकारी, और धार्मिक कट्टरता के माध्यम से काम किया है।

परमेश्वर के अधिकार के चिह्न के रूप में, सब्त ने शैतान के इस दावे को चुनौती दी कि वह परमेश्वर का स्थान लेगा। विरोधी ने कहा, "मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; ... मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा" (यशायाह 14:13,14)। शैतान वास्तव में अपनी पूजा करवाना चाहता था। इसे पूरा करने के लिए, उसे परमेश्वर के यथोचित शासक होने के दावे को रद्द करना था। परमेश्वर का अधिकार उसके सृष्टिकर्ता होने के दावे पर आधारित था, और सब्त उस अधिकार का चिह्न था। सब्त के दिन को नष्ट करके, शैतान उपासना के नकली दिन द्वारा प्रतीकत्व कर, प्राधिकरण के नकली दावों के आधार पर एक नकली सरकार स्थापित करने का रास्ता तैयार करने वाला था।

अध्याय 4

प्राधिकरण पर लड़ाई

युगों में झांकना और मसीह और शैतान के बीच के महान विवाद का कार्यचालन देखने दिलचस्प है। प्रतियोगिता ने हमेशा प्राधिकरण के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया है। दुष्ट की कार्यनीति परमेश्वर के सृष्टिकर्ता होने के दावे पर द्विशाखी हमला है। सबसे पहले, प्राकृतिक चयन के अपने मानवतावादी सिद्धांत के साथ विकासवाद द्वारा। दूसरा, सृजनात्मक शक्ति का चिह्न सातवें दिन के सब्त के पालन को नष्ट करने के लिए चिरकालीन प्रयास से।

प्रसंगवश हम केवल यह कह सकते हैं कि परमेश्वर के अधिकार को बदनाम करने के इन नारकीय प्रयासों में से प्रत्येक ने सभी अपेक्षाओं से परे एक दुःखद सफलता को उत्पन्न किया है। डार्विन के जैविक विकास के सिद्धांत के कारण लाखों को धार्मिक संशयवादी

और अनीश्वरवादी बन गए हैं। मनुष्य के किसी भी पतन से इनकार कर जिसमें पाप से मुक्ति के लिए मुक्तिदाता की आवश्यकता होगी, विकासवाद ने उद्धार की योजना के साथ-साथ सृजन के तथ्य पर भी प्रहार किया।

इसी रीति से सब्त पर शैतान के हमलों के कारण लाखों लोग बाइबिल की दस आज्ञाओं में उस एक आज्ञा का उल्लंघन करने लगे हैं जिसे परमेश्वर ने संपूर्ण व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता का विशिष्ट परीक्षण बनाया था।

सच्चे परमेश्वर को समर्पित उन लाखों लोगों की वफादारी को दूर करने की एक सफल योजना को शैतानी कार्यनीति की एक उत्कृष्ट कृति की आवश्यकता थी। इसमें समय लगेगा। इसमें भ्रामक मत परिवर्तन की सदियाँ शामिल होगी। परमेश्वर की सेवा टहल करने से हटकर शैतान की सेवा करने में कोई नाटकीय मोड़ नहीं होगा। रहस्य धार्मिक दाँव-पेंच के माध्यम से आज्ञाकारिता जीतने का होगा। शैतान ने रोमियों 6:16 के सिद्धांत को पौलुस के द्वारा यह लिखा जाने से बहुत पहले समझ लिया "क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो?"

आज्ञाकारिता निष्ठा और उपासना का सर्वोच्च रूप है। अगर शैतान एक ऐसा मुद्दा बना सकता है जो लोगों को परमेश्वर की अवज्ञा करने का कारण बनेगा, तो उसके पास अपने उद्देश्य के प्रति आज्ञाकारिता जीतने का एक समान मौका था। निर्णायक प्रतियोगिता परमेश्वर की व्यवस्था पर होगी। इसने परमेश्वर के राज्य की नींव का गठन किया। शैतान व्यवस्था में विश्वास को कैसे नष्ट कर सकता था और उसकी जगह लोगों को अपने प्रति आज्ञाकारी कैसे बना सकता था? और वह किस आज्ञा पर हमला करे? जाहिर है,

वह जो परमेश्वर की रचनात्मक शक्ति और उसके शासन के अधिकार की ओर इशारा करता है। सच्चे परमेश्वर की पहचान के संकेत के रूप में, सब्त हमेशा शैतानी घृणा का विषय रहा है। परमेश्वर ने पुराने नियम में सब्त को अपनी व्यवस्था के प्रति वफादारी की परीक्षा के रूप में चुना थाः "इससे मैं उनकी परीक्षा करूंगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं" (निर्गमन 16:4)।

अध्याय 5

व्यवस्था की परीक्षण बिंदु

चूंकि परमेश्वर ने सब्त को सभी दस आज्ञाओं का परीक्षण बिंदु बनाया था, इसलिए शैतान ने इसे युग का विशाल मुद्दा बनाने का दृढ़ संकल्प लिया। सब्त के दिन को नष्ट करके, शैतान पूजा के नकली दिन के लिए आज्ञाकारिता का दावा करने के लिए अपनी सुपर योजना शुरू करने के लिए तैयार होगा। समझौता किए हुए मसीही धर्म, जिसने बुतपरस्त प्रभावों को धीरे-धीरे स्वीकार कर लिया था, उसकी कमजोरी में हेरफेर करते हुए, शैतान ने अपनी उत्कृष्ट कृति - एक विश्वव्यापी चर्च-राज्य की स्थापना की - जो कि आराधना की उसकी नकली पद्धति के साथ अनुपालन को बेरहमी से लागू करेगा।

एक हजार से अधिक वर्षों के लिए, बुतपरस्त कांस्टेंटाइन के तथाकथित धर्म-परिवर्तन के साथ शुरुआत करते हुए, स्वधर्म त्याग का दुःखद इतिहास प्रकट हुआ। नए-नवेले ईसाई सम्राट का लगभग पहला कृत्य था, सब्त पालन के खिलाफ एक कानून बनाना और अन्य कानूनों को स्थापित करना, जिनके अनुसार लोगों को

मूर्तिपूजक सूर्य पूजा के लिए समर्पित एक निराधार सौर अवकाश, सप्ताह के पहले दिन विश्राम करना था।

इस समय हम बुतपरस्त रविवार के पालन को लागू करने वाले उन पोप संबंधी कलीसियाई सभाओं के सुप्रलेखित इतिहास पर चर्चा नहीं करेंगे, जिन्होंने मृत्यु का भय दिखाकर बुतपरस्त रविवार के पालन को लागू किया था। तथ्य उन लोगों को अच्छी तरह से ज्ञात हैं जो खुले दिमाग के साथ रिकॉर्ड खोजने के लिए तैयार रहे हैं। चौथी और पाँचवीं शताब्दियों के दौरान, बाइबिल के सच्चे सब्त को विस्थापित करने के लिए सप्ताह का पहला दिन पोप के फरमान द्वारा गौरवान्वित किया गया था।

दुर्भाग्य से, पूर्वाग्रहों और झूठी जानकारियों सूचनाओं ने हजारों ईसाइयों को इस प्रतिस्थापन के भारी ऐतिहासिक सबूतों के लिए अपनी आँखें बंद करने के लिए प्रेरित किया है। उनके पूर्वाग्रह की जड़ों को पहचानना मुश्किल नहीं है। शैतान ने अपनी विपक्षी प्रणाली पर बहुत लंबा काम किया है ताकि इसे आसानी से खारिज नहीं कर किया जा सके। युग शुरू से अन्त तक उसने पूजा के नकली दिन के लिए आज्ञाकारिता को बढ़ावा देने के लिए सूक्ष्म झूठे तर्कों की एक श्रृंखला को परिपूर्ण किया है। वह अब भी सब्त से नफरत करता है जो सच्चे परमेश्वर की पहचान करता है।

जैसे ही हम सातवें दिन सब्त के दिन इन हमलों को उजागर करते हैं, क्या हम यह समझने में सक्षम होते हैं कि क्यों लाखों लोग सप्ताह के पहले दिन का अनुपालन करते रहते हैं, एक ऐसा दिन जिसके लिए बाइबल का समर्थन करने वाला कोई पद नहीं है। कोई भी परमेश्वर की हस्तलिखित व्यवस्था के अर्थ से असहमत नहीं है, "सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना।" फिर भी लाखों इसे नहीं

मानते। रविवार के बुतपरस्त मूल के भारी सबूतों का कोई भी खंडन नहीं कर सकता है, फिर भी लाखों लोग इसे दस आज्ञाओं के स्पष्ट आदेश के अनुसार रखते हैं। क्यों? मैं दोहराता हूं, इसका कारण शैतान के चतुर तर्कों में निहित है जिसने प्रभु के पवित्र विश्राम के खिलाफ पूर्वाग्रह का माहौल बनाया है। अब हम उन तर्कों की कुछ प्रमुख कमजोरियों की जाँच करेंगे।

अध्याय 6

प्रमुख भ्रांति - 1#
सब्त का दिन केवल यहूदियों के लिए बनाया गया था

इस झूठ ने इतनी ताकत हासिल कर ली है कि मसीहियों के बहुसंख्यक लोग इसे "यहूदी सब्त" कहते हैं। लेकिन कहीं भी हमें बाइबल में ऐसी कोई अभिव्यक्ति नहीं मिली है। इसे "प्रभु का सब्त" कहा जाता है, लेकिन कभी "यहूदी का सब्त" (निर्गमन 20:13) नहीं कहा जाता है। लुका नए नियम का एक गैर-यहूदी लेखक था और अक्सर उन चीजों को संदर्भित करता था जो अजीबोगरीब यहूदी थे। उसने "यहूदी जाति", "यहूदियों"," "यहूदियों के देश," और "यहूदियों के आराधनालय" की बात की थी (प्रेरितों के काम 10:22; 12:11; 10:39; 14:1)। लेकिन कृपया ध्यान दें कि लूका ने कभी भी "यहूदियों के सब्त के दिन" का उल्लेख नहीं किया, हालांकि उसने सब्त का बार-बार उल्लेख किया।

मसीह ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि "सब्त को मनुष्य के लिए बनाया गया है" (मरकुस 2:27)। तथ्य यह है कि जब परमेश्वर ने

सब्त बनाया था, तब आदम एकमात्र मनुष्य था जो अस्तित्व में था। सृजन के बाद कम से कम 2,000 वर्षों तक दुनिया में कोई भी यहूदी नहीं थे। यह उनके लिए कभी नहीं बनाया जा सकता था। यीशु ने मानव जाति का जिक्र करते हुए सामान्य अर्थ में "मनुष्य" शब्द का इस्तेमाल किया। उसी शब्द का उपयोग विवाह की विधि के संबंध में किया जाता है जिसे सृजन के समय भी पेश किया गया था। स्त्री को पुरषके लिए ही बनाया गया था जैसे मनुष्य" के लिए सब्त बनाया गया था। निश्चित रूप से कोई भी यह नहीं मानता है कि विवाह केवल यहूदियों के लिए बनाया गया था।

तथ्य यह है कि इससे पहले कि पाप दुनिया में आया, परमेश्वर द्वारा दो सुंदर, मूल विधियों की स्थापना की गई थी- विवाह और सब्त। दोनों को मनुष्य के लिए बनाया गया था, दोनों को सृष्टिकर्ता का विशेष आशीर्वाद मिला और दोनों आज भी उतने ही पवित्र बने हुए हैं जितने अदन की वाटिका में पवित्र किए गए थे।

यह भी ध्यान रखना दिलचस्प है कि यीशु वह था जिसने समय के पहले सप्ताह में सब्त को बनाया था। सब्त के दिन का स्वामी होने के उसके दावे का एक कारण था (मरकुस 2:28)। यदि वह सब्त के दिन का प्रभु है, तो सब्त प्रभु का दिन होना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 1:10 के अनुसार यूहन्ना ने "प्रभु का दिन" पर एक दिव्य दर्शन देखा था। उस दिन सब्त का दिन था। बाइबल में यह एकमात्र दिन है जो इस प्रकार निर्दिष्ट है और जिसपर परमेश्वर अपना अधिकार प्रतिपादित करताहै। दस आज्ञाओं को लिखने में, परमेश्वर ने इसे "परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन" कहा (निर्गमन 20:10)। यशायाह में उसका यह उद्धरण दिया गया है, "विश्रामदिन, मेरा पवित्र दिन" (यशायाह 58:13)।

लेकिन हमें इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि यह परमेश्वर जिसने दुनिया को बनाया और सब्त को वह यीशु मसीह स्वयं था। यूहन्ना ने लिखाः "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। ... और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:1–3, 14)।

पौलुस ने स्पष्ट रूप से यीशु को सृष्टिकर्ता के रूप में पहचाना, " ... उसका प्रिय पुत्रः जिस में हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा प्राप्त होता है ... क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई" (कुलुस्सियों 1:13–16)

मसीहियों के लिए सब्त के दिन को यीशु से अलग करना एक दुखद भूल है। क्योंकि वह सब्त का रचनाकार, बनाने वाला, पवित्रीकरण करने वाला ,और सब्त का वास्तुकार है। उस दिन पर जो आशीष उसने दी है उसका खंडन करना उसके अधिकार को अस्वीकार करना है।

इस तर्क ने कई लोगों को विश्वास दिलाया है कि सृष्टि के बाद सब्त सीमित समय के लिए ही अस्तित्व में था। लेकिन क्या यह एक तथ्य है? दरअसल, सब्त कभी भी किसी की छाया या प्रकार नहीं हो सकता है, जिसका साधारण कारण यह है कि इसे पाप के मानव परिवार में प्रवेश करने से पहले बनाया गया था। कुछ छायाओं और विशिष्ट पर्यवेक्षणों को पाप के परिणामस्वरूप स्थापित किया गया और और वे पाप से मुक्ति की ओर इशारा करते थे। इस तरह के बलिदानों को यीशु, परमेश्वर के मेमने की मृत्यु के प्रतीक के लिए

नियोजित किया गया था। कोई पशु बलि नहीं होती, अगर कोई पाप नहीं होता। जब मसीह क्रूस पर मर गया, तो ये बलिदान समाप्त कर दिए गए, क्योंकि प्रकार ने भुगतान कर दिया था (मत्ती 27:51)। लेकिन पाप के इस दुनिया में प्रवेश करने से पहले कोई छाया नहीं थी; इसलिए, सब्त को प्रकार और छाया के रीति संबंधी व्यवस्था में शामिल नहीं किया जा सकता था।

पौलुस ने कुलुस्सियों 2:14-16 में अध्यादेशों की अस्थायी प्रणाली को "हमारे विरुद्ध" और "हमारे विपरीत" कहा। उसने इसे मदिरा के चढ़ावे, अन्नबलि और व्यवस्था के वार्षिक उत्सवों से बांधा था जिसे "भुला दिया" गया था। यह सच है कि उसने विषय वाक्य में भी सब्तों का उल्लेख किया है, लेकिन ध्यान रखें कि उसने उन्हें "सब्त के दिन जो आने वाली बातों की छाया हैं" कहा। क्या कुछ सब्त दिन सूली पर भुला दिए गए थे? हां, कम से कम चार वार्षिक सब्त थे जो महीने के कुछ निश्चित दिनों पर आते थे, और उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया था। वे छाया थे और उन्हें निर्दिष्ट अन्नबलि और मदिरा के चढ़ावे की आवश्यकता थी। इन वार्षिक सब्तों का वर्णन लैव्यव्यवस्था 23:24-36 में किया गया है, और फिर पद 37 और 38 में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया हैः "यहोवा के नियत पर्व ये ही हैं, इन में तुम यहोवा को हव्य चढ़ाना, अर्थात होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, और अर्घ, प्रत्येक अपने अपने नियत समय पर चढ़ाया जाए और पवित्र सभा का प्रचार करना। इन सभों से अधिक यहोवा के विश्रामदिनों को मानना, और अपनी भेंटों, और सब मन्नतों, और स्वेच्छाबलियों को जो यहोवा को अर्पण करोगे चढ़ाया करना।"

पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से वार्षिक, छाया सब्तों और साप्ताहिक "यहोवा के विश्रामदिनों" के बीच अंतर करता है। रीति संबंधी सब्तों को सूली पर समाप्त कर दिया गया था; उन्हें पाप के परिणामस्वरूप

जोड़ा गया था। लेकिन दस-आज्ञा व्यवस्था के सब्त को पाप की शुरुआत से पहले ही पवित्र बनाया गया था और बाद में परमेश्वर की उंगली से लिखी गई महान नैतिक व्यवस्था में शामिल किया गया था। यह अपने स्वभाव में ही शाश्वत था।

अध्याय 7

प्रमुख भ्रांति - 2#
बस सात दिनों में किसी भी दिन को मानें

इस तर्क के द्वारा शैतान ने दुनिया को उस सब्त के स्थान पर जिस परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, एक विकल्प को स्वीकार करने के लिए तैयार किया। पत्थर की तालिकाओं पर परमेश्वर ने युगों की महान, अपरिवर्तनीय व्यवस्था लिखी। हर शब्द महत्वपूर्ण और सार्थक था। एक भी वाक्य अस्पष्ट या रहस्यमय नहीं था। शिक्षित और अशिक्षित को, पापी और मसीही को, दस आज्ञाओं के सरल, स्पष्ट शब्दों को समझने में कोई समस्या नहीं है। परमेश्वर ने जो चाहा वह कहा और परमेश्वर ने वही कहा जो उसका उद्देश्य था। किसी ने भी उस व्यवस्था को इतना जटिल कि वे समझ न सकें मानकर निरस्त करने की कोशिश नहीं की।

दस आज्ञाओं में से अधिकांश समान शब्द "तू ... नहीं कर" से प्रारंभ होती हैं, लेकिन आज्ञाओं के ठीक बीच में हम चौथी आज्ञा पाते हैं जहां "स्मरण रख" का उपयोग हुआ है। यह एक अलग क्यों है? क्योंकि परमेश्वर उन्हें याद दिलाने के लिए कुछ ऐसा करने की आज्ञा दे रहा था जो पहले से मौजूद था लेकिन भुला दिया गया था। उत्पत्ति की पुस्तक इन शब्दों में सब्त की उत्पत्ति का वर्णन करती है,

"आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया। ... और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया" (उत्पत्ति 2:1–3)।

परमेश्वर ने किस दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया? सातवाँ दिन। इसे पवित्र कैसे रखा जाना था? विश्राम करके। क्या अन्य छः में से किसी भी दिन को पवित्र रखा जा सकता था? नहीं? क्यों नहीं? क्योंकि परमेश्वर ने उन दिनों को विश्राम करने का नहीं बल्कि काम करने का आदेश दिया था। क्या परमेश्वर के आशीर्वाद से फर्क पड़ता है? बेशक। यही कारण है कि माता–पिता अपने बच्चों को आशीष देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। उनका मानना है कि इससे फर्क पड़ता है। सातवाँ दिन अन्य सभी छह दिनों से अलग है, क्योंकि इसमें परमेश्वर की आशीष है।

कुछ और प्रश्नः परमेश्वर ने दिन को आशीष क्यों दी? क्योंकि उसने छह दिन में दुनिया की सृष्टि की। यह दुनिया का जन्मदिन था, एक अति महान काम का स्मारक। क्या सब्त स्मारक को बदला जा सकता है? कभी नहीँ। क्योंकि यह अतीत काल में एक निपुण तथ्य की ओर इशारा करता है। 4 जुलाई स्वतंत्रता दिवस है। क्या इसे बदला जा सकता है? नहीं, क्योंकि स्वतंत्रता की घोषणा पर 4 जुलाई, 1776 को हस्ताक्षर किए गए थे। आपका जन्मदिन भी नहीं बदला जा सकता है। यह आपके जन्म का स्मारक है, जो एक निर्धारित दिन पर हुआ। अपने जन्मदिन को बदलने के लिए, स्वतंत्रता दिवस को बदलने के लिए, या सब्त के दिन को बदलने के लिए इतिहास को फिर से होकर गुजरना होगा। हम दूसरे दिन को

स्वतंत्रता दिवस कह सकते हैं, और दूसरे दिन को हम सब्त का दिन कह सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है।

क्या परमेश्वर ने कभी मनुष्य को अपना स्वयं का विश्राम दिन चुनने का सौभाग्य दिया? उसने नहीं किया। वास्तव में, परमेश्वर ने बाइबल में यह पुष्टि की थी कि सब्त को उसके स्वयं के दिव्य चयन द्वारा बसाया और सील किया गया था और उसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। मन्ना देने के विषय में निर्गमन 16 पढ़ें। इजरायल को दिखाने के लिए कि पवित्र दिन कौन सा था, 40 साल तक ईश्वर ने हर हफ्ते तीन चमत्कार किए। (1) सातवें दिन कोई मन्ना नहीं गिरा। (2) वे इसे खराब किए बिना रात भर नहीं रख सकते थे, लेकिन (3) जब उन्होंने इसे सब्त के लिए रखा, तो यह मीठा और ताजा बना रहा। लेकिन कुछ इसराएलियों का कई आधुनिक मसीहियों जैसा ही विचार था। उन्होंने महसूस किया कि सात दिनों में कोई भी दिन पवित्र रखना सही होगाः "तौभी लोगों में से कोई कोई सातवें दिन भी बटोरने के लिये बाहर गए, परन्तु उन को कुछ न मिला। तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे?" (निर्गमन 16:27,28)

क्या आपको समझ आया? इन लोगों ने सोचा कि किसी भी अन्य दिन को सातवें दिन की तरह रखा जा सकता है। शायद वे सप्ताह के पहले दिन का पालन करने की योजना बना रहे थे, या किसी और दिन जो अधिक सुविधाजनक था। क्या हुआ? परमेश्वर ने उनसे मुलाकात की और उन पर सातवें दिन काम करके उसकी व्यवस्था का उलंघन करने का आरोप लगाया। क्या परमेश्वर आज सब्त तोड़ने वालों से भी यही बात कहेगा? हाँ। वह कल, आज और हमेशा के लिए वही है - वह बदलता नहीं है। परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो सब्त के दिन काम करने जाते हैं, उनकी

भावनाओं की परवाह किए बिना, वे उसकी व्यवस्था को तोड़ने के लिए दोषी हैं। याकूब बताता है कि दस आज्ञाओं में से एक को भी तोड़ना पाप हैः" क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। इसलिये कि जिस ने यह कहा, कि तू व्यभिचार न करना उसी ने यह भी कहा, कि तू हत्या न करना इसलिये यदि तू ने व्यभिचार तो नहीं किया, पर हत्या की तौभी तू व्यवस्था का उलंघन करने वाला ठहरा" (याकूब 2:10,11)।

अध्याय 8

प्रमुख भ्रांति -3#
हम सही सातवें दिन का पता नहीं लगा सकते

यह एक भ्रांति है जिसने कईयों को चौथी आज्ञा की अवज्ञा में सुख पहुंचाया है। यह बिल्कुल सच नहीं है। यहाँ चार सकारात्मक प्रमाण हैं जो आज सब्त के दिन की पहचान करते हैंः

1. पवित्र शास्त्रों के अनुसार, मसीह की मृत्यु शुक्रवार को हुई और वह सप्ताह के पहले दिन रविवार को जी उठा।

व्यावहारिक रूप से सभी चर्च ईस्टर रविवार और गुड फ्राइडे का पालन करके इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। बाइबिल सबूत यहाँ हैः "उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांग ली। और उसे उतारकर चादर में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो चट्टान में खोदी

हुई थी; और उस में कोई कभी न रखा गया था। वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था" (लूका 23:52-54)।

यहाँ इस बात का प्रमाण है कि यीशु सब्त के एक दिन पहले मृत्यु को प्राप्त हुआ। इसे "तैयारी का दिन" कहा जाता था क्योंकि यह सब्त के लिए तैयारी का समय था। आइये अगले पद पढ़ते हैंः "और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आईं थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है। और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार कियाः और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया" (पद 55,56)।

कृपया ध्यान दें कि स्त्रियों ने "आज्ञा के अनुसार" सब्त के दिन विश्राम किया। आज्ञा कहती है, "सातवाँ दिन सब्त का दिन है, "तो हम जानते हैं कि वे शनिवार का पालन कर रही थीं। लेकिन अगला ही पद कहता है, "परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं। और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया" (लूका 24:1,2।

लगातार तीन दिन हमारे लिए कितने स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। वह शुक्रवार, तैयारी के दिन जिसे आमतौर पर गुड फ्राइडे कहा जाता है, मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसने सातवें दिन, सब्त के दिन, "आज्ञा के अनुसार" कब्र में विश्राम किया। वो शनिवार का दिन था। फिर सप्ताह के पहले दिन, रविवार को, जिसे कई ईस्टर रविवार मानते हैं यीशु कब्र से जी उठा।

जो कोई भी गुड फ्राइडे या ईस्टर रविवार का पता लगा सकता है, उसे सच्चे सब्त को खोजने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

2. कैलेंडर को इसलिये नहीं बदला गया है कि सप्ताह के दिनों को भ्रमित किया जा सके।

हम निश्चित हो सकते हैं कि हमारा सातवाँ दिन वही दिन है जिसका यीशु अनुपालन करता था जब वह यहाँ था। पोप ग्रेगरी तेरह ने 1582 में एक कैलेंडर परिवर्तन किया, लेकिन इसने साप्ताहिक चक्र में हस्तक्षेप नहीं किया। हमारे वर्तमान ग्रेगोरियन कैलेंडर का नाम उसके नाम पर रखा गया था जब उसने 1582 में वह छोटा सा परिवर्तन किया था।

पोप ग्रेगरी ने कैलेंडर का क्या किया? 1582 से पहले जूलियन कैलेंडर प्रभावी रहा था, जिसे जूलियस सीजर ने लगभग 46 ई.पू. जारी किया और नाम उसका अपने नाम पर रखा। लेकिन जूलियन कैलेंडर ने वर्ष की अवधि की गणना 365 1/4 दिनकी थी, और वर्ष वास्तव में 365 1/4 दिनों से ग्यारह मिनट कम है। वे ग्यारह मिनट जमा हुए, और 1582 तक कैलेंडर की संख्या सौर प्रणाली के साथ दस दिन सामंजस्य से बाहर थे। ग्रेगरी ने उन दस दिनों को कैलेंडर की संख्या से बाहर कर दिया। यह गुरुवार, 4 अक्टूबर, 1582 था और अगले दिन, शुक्रवार, 5 अक्टूबर होना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय, ग्रेगोरी ने इसे 15 अक्टूबर बना दिया, और कैलेंडर को स्वर्गीय निकायों के साथ सामंजस्य में लाने के लिए ठीक दस दिनों को निकाल दिया।

क्या सप्ताह के दिन अव्यवस्थित कर दिए गए थे? नहीं। शुक्रवार अभी भी गुरुवार के बाद, और शनिवार अभी भी शुक्रवार के बाद आता था। वही सातवाँ दिन रहा, और साप्ताहिक चक्र बिल्कुल उलट पुलट नहीं किया गया। जब हम शनिवार को सातवाँ दिन मानते हैं, तो हम उसी दिन का अनुपालन कर रहे होते हैं जिसका

यीशु अनुपालन करता था, और लूका4:16 के अनुसार उसने हर हफ्ते किया।

3. सच्चे सब्त के लिए तीसरा प्रमाण सबसे निर्णायक है। यहूदी लोग अब्राहम के समय से सातवें दिन का पालन करते रहे हैं, और वे आज भी इसे मानते हैं।

यहाँ एक संपूर्ण राष्ट्र है - लाखों व्यक्ति-जो हजारों सालों से, हफ्ता दर हफ्ता, कैलेंडर या बिना कैलेंडर के समय का हिसाब रख रहे हैं। क्या वे भूल सकते थे?

असंभव। केवल अगर पूरा राष्ट्र 24 घंटे के लिए सो जाता और बाद में कोई भी उन्हें इसके बारे में नहीं बताता, वे एक दिन खो सकते थे।

जब से परमेश्वर ने उत्पत्ति में सब्त का दिन बनाया, उस में कोई परिवर्तन या लोप नहीं हुआ है। सप्ताह की उत्पत्ति सृजन कहानी में पाई जाती है। सात दिनों के चक्र में समय मापने का कोई वैज्ञानिक या खगोलीय कारण नहीं है। यह परमेश्वर की एकपक्षीय व्यवस्था है और इसे एक कारण से चमत्कारिक रूप से संरक्षित किया गया है-क्योंकि पवित्र सब्त का दिन एकमात्र सच्चे परमेश्वर की रचनात्मक शक्ति की ओर इशारा करता है। यह दुनिया भर में और मानव जीवन पर उनकी संप्रभुता का संकेत है; सृजन और उद्धार का संकेत।

क्या यह कारण नहीं है कि परमेश्वर सब्त पालन अनंत काल तक रक्षा करता रहेगा? हम यशायाह 66:22,23 में पढ़ते हैंः "क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगाय यहोवा की यही वाणी है। फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे नये चांद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे

विश्राम दिन तक समस्त प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत करने को आया करेंगे; यहोवा का यही वचन है"।

सब्त परमेश्वर के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि वह चाहता है कि उसके लोग सुंदर नई पृथ्वी में आने वाले समय के दौरान इसका पालन करे। यदि यह उसके लिए इतना महत्वपूर्ण है, तो क्या यह हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए? अगर हम इसे तब मानेंगे, तो क्या हमें वर्तमान समय में इसका पालन नहीं करना चाहिए?

झूठे देवताओं, नास्तिक विकासक्रम, और मनुष्य की परंपराओं के युग में दुनिया को महान सृष्टिकर्ता-परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा की परीक्षा के रूप में और उसकी शक्ति के माध्यम से हमारे पवित्रिकरण के प्रतीक के रूप में सब्त की पहले से कहीं अधिक जरूरत है।

4. प्रमाण संख्या चार इस तथ्य में निहित है कि पृथ्वी की सौ से अधिक भाषाओं में शनिवार के लिए "सब्त" शब्द का उपयोग किया जाता है।

उदाहरण के लिए, शनिवार के लिए स्पेनिश शब्द शब्द सबादो है, जिसका अर्थ सब्त है। इससे क्या साबित होता है? यह साबित करता है कि जब उन सौ भाषाओं की उत्पत्ति बहुत बहुत पहले हुई थी, शनिवार को सब्त के दिन के रूप में माना जाता था और उसे दिन के ही नाम में शामिल किया गया था।

अध्याय 9

प्रमुख भ्रांति- 4#
सब्त मिस्र से उद्धार का स्मारक मात्र था

यह विचित्र विचार पुराने नियम में एक एकल पद से लिया गया है और यह सब्त के सही मूल के बारे में कई स्पष्ट बयानों का खंडन करने के लिए तोड़ा-मरोड़ा गया है। यह पद व्यवस्थाविवरण 5:14,15 में पाया गया हैः "परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन हैय उस में न तू किसी भांति का कामकाज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर होय जिस से तेरा दास और तेरी दासी भी तेरी नाईं विश्राम करे। और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बड़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है।"

कुछ लोग इस पद से अनुमान लगाते हैं कि परमेश्वर ने सब्त को मिस्र से पलायन के स्मारक के रूप में दिया था। लेकिन सब्त की स्थापना की उत्पत्ति की पुस्तक में कहानी (उत्पत्ति 2:1-3) और स्वयं परमेश्वर द्वारा चौथी आज्ञा की शब्दावली(निर्गमन 20:11) सब्त को सृष्टि के स्मारक के रूप में प्रकट करते हैं।

इन दोनों पदों को समझने की कुंजी "दास" शब्द में है। परमेश्वर ने कहा, "इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था" और इस वाक्य से पहले वह उन्हें याद दिलाता है कि "तेरा दास और तेरी दासी भी तेरी नाईं विश्राम करे" दूसरे शब्दों में, मिस्र में दास

के रूप में उनका अनुभव उन्हें सब्त के दिन अपने सेवकों को विश्राम देकर उनके साथ उचित व्यवहार करने की याद दिलाएगा।

उसी तरह परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, "और यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे, तो उसको दुःख न देना, ... क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे" (लैव्यव्यवस्था 19:33,34)।

अन्य आदेशों का पालन करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में मिस्र के उद्धार को याद दिलाना परमेश्वर के लिए असामान्य नहीं था। व्यवस्थाविवरण 24:17, 18 में, परमेश्वर ने कहा, "किसी परदेशी मनुष्य वा अनाथ बालक का न्याय न बिगाड़ना, और न किसी विधवा के कपड़े को बन्धक रखना; और इस को स्मरण रखना कि तू मिस्र में दास था, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहां से छुड़ा लाया हैय इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं।"

न तो न्यायसंगत होने की और न ही सब्त का पालन करने की आज्ञा निर्गमन को यादगार बनाने के लिए दी गई, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें बताया कि उन्हें कैद से बाहर लाने में उसकी भलाई सब्त के दिन अपने सेवकों के साथ भद्र व्यवहार करने और विधवाओं के साथ उचित व्यवहार करने का एक मजबूत अतिरिक्त कारण खड़ा करती है।

उसी तरह, परमेश्वर ने लैव्यव्यवस्था 11:45 में उनसेकहा, "क्योंकि मैं वह यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया हूं; ... इसलिये तुम पवित्र बनो।" निश्चित रूप से कोई भी इस बात पर जोर नहीं देगा कि निर्गमन से पहले पवित्रता का अस्तित्व नहीं था, या यह कि उनके उद्धार का स्मारक बनाने के लिए कभी बाद में केवल यहूदियों तक सीमित होगा।

अध्याय 10

प्रमुख भ्रांति- 5#
पुनरुत्थान के सम्मान में रविवार का पालन कर

यह सच है कि यीशु सप्ताह के पहले दिन जी उठा था, लेकिन बाइबल में कहीं भी किसी के लिए उस दिन को पवित्र रखने की थोड़ी सी भी जानकारी नहीं है। सब्त पालन का आधार परमेश्वर का प्रत्यक्ष हस्तलिखित आदेश है।

सप्ताह के कुछ दिनों में कई अद्भुत घटनाएं हुईं, लेकिन हमें उन्हें पवित्र रखने की कोई आज्ञा नहीं है। यीशु शुक्रवार को हमारे पापों के लिए मर गया। यह रिकॉर्ड किए गए इतिहास में संभवतः सबसे महत्वपूर्ण घटना है। यह उस क्षण को दर्शाता है जब मेरी मृत्यु की सजा बदलगई थी और मेरी मुक्ति का आश्वासन दिया गया था। लेकिन एक भी बाइबल पद इस बात का संकेत नहीं देता कि हमें इस महान महत्व के दिन का पालन करना चाहिए।

यह एक प्रभावशाली क्षण था जब यीशु उस रविवार की सुबह कब्र से उठे, लेकिन बाइबिल के सबूतों का एक संकेत नहीं है कि हमें पुनरुत्थान के सम्मान में इसका पालन करना चाहिए। दर्ज शास्त्रों में रविवार के पालन का एक भी उदाहरण नहीं मिला है।

बेशक,बाइबल में पुनरुत्थान के एक स्मारक की आज्ञा दी गई है, लेकिन यह रविवार का दिन नहीं है। पौलुस ने लिखाः "सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:4)।

बपतिस्मा मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने और पुनरुत्थान का स्मारक है। जो लोग मानते हैं कि रविवार का पालन उसके पुनरुत्थान का सम्मान करता है, वे इस बात का हवाला देते हैं कि जिस दिन मसीह कब्र से जी उठा था और उसी दिन अटारी में शिष्यों की बैठक हुई। उनके लिए वह सभा उसके जी उठने का जश्न मनाने के लिए थी। लेकिन जब हम इस घटना का बाइबल रिकॉर्ड पढ़ते हैं, तो हमें पता चलता है कि हालात बिलकुल अलग थे। लूका हमें बताता है कि, भले ही शिष्यों ने मरियम मगदलीनी की प्रत्यक्षदर्शी कहानी सुनी उन्होनें विश्वास नहीं किया। "इस के बाद वह दूसरे रूप में उन में से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उन की भी प्रतीति न की। पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी" (मरकुस 16:12-14)।

जाहिर है, अटारी में उन शिष्यों में से कोई भी नहीं मानता था कि वह जी उठा था, इसलिए वे खुशी से पुनरुत्थान का जश्न नहीं मना सकते थे। यूहन्ना ने एक साथ होने का कारण इन शब्दों में बताया: "सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे" (यूहन्ना 20:12)।

इस प्रकार, हमने परमेश्वर के पवित्र सब्त के दिन के पालन के विरुद्ध इस्तेमाल किए गए प्रमुख तर्कों की जांच की है। आपत्तियों में से कोई भी इस बात का सबूत नहीं देता कि परमेश्वर ने कभी सब्त के बारे में अपना विचार बदला। जब उसने "स्मरण रखना" वाक्यांश को चौथी आज्ञा में लिखा, तो यह उसी सातवें दिन के संदर्भ में था जो हमारे दीवार पर लटके कैलेंडर पर दिखाई देता है। न तो मनुष्य

और न ही दानव उस शाश्वत नैतिक कानून की वैधता को कम कर सकते हैं। परमेश्वर हम में से हर एक को सब्त की आज्ञा को हमारे प्रेम और वफादारी को स्वर्ग की विशेष परीक्षा के रूप में मानने का साहस प्रदान करें। जैसा कि हमने जान लिया है, जब यीशु वापस आएगा, हम उसी सब्त को उसी के साथ अंतहीन युगों तक रखेंगे। आमीन, हे प्रभु यीशु आ।

AMAZING FACTS
India

हमारी मुफ़्त बाइबिल अध्ययन
पाठ्यक्रम को ना चूकें।

BibleStudy.AFTV.in

पर आज ही नामांकन करें!

AMAZING FACTS
India

परमेश्वर का संदेश हमारा मिशन है

BOOKSTORE.AFTV.IN

पर जाएं जहां आप कई भाषाओं में मसीही सामग्री की खरीद कर सकते हैं और उन्हें आपके द्वार तक पहुंचाया जा सकता है!

अधिक मुफ़्त डिजिटल पुस्तकें खोजें

AFTV.in/Free-Book-Library

हिन्दी, तमिल, तेलगु, कई भाषाओं में उपलब्ध है ...

AMAZING FACTS

India

Post Box No. 51 • Banjara Hills,
Hyderabad, TS, 500034

www.AmazingFactsIndia.org